



# Text of Mann ki Baat address by PM on All India Radio

Posted On: 30 APR 2017 8:02PM by PIB Delhi

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार | हर 'मन की बात' से पहले, देश के हर कोने से, हर आयु वर्ग के लोगों से, 'मन की बात' को ले करके ढेर सारे सुझाव आते हैं | आकाशवाणी पर आते हैं, **NarendraModiApp** पर आते हैं, **MyGov** के माध्यम से आते हैं, फोन के द्वारा आते हैं, **recorded message** के द्वारा आते हैं | और जब कभी-कभी मैं उसे समय निकाल करके देखता हूँ तो मेरे लिये एक सुखद अनुभव होता है | इतनी विविधताओं से भरी हुई जानकारीयें मिलती हैं | देश के हर कोने में शक्तियों का अम्बार पड़ा है | साधक की तरह समाज में खपे हुए लोगों का अनगिनत योगदान, दूसरी तरफ़ शायद सरकार की नज़र भी नहीं जाती होगी, ऐसी समस्याओं का भी अम्बार नज़र आता है | शायद व्यवस्था भी आदी हो गयी होगी, लोग भी आदी हो गए होंगे | और मैंने पाया है कि बच्चों की जिज्ञासायें, युवाओं की महत्वाकांक्षाएँ, बड़ों के अनुभव का निचोड़, भाँति-भाँति की बातें सामने आती हैं | हर बार जितने **inputs** 'मन की बात' के लिये आते हैं, सरकार में उसका **detail analysis** होता है | सुझाव किस प्रकार के हैं, शिकायतें क्या हैं, लोगों के अनुभव क्या हैं | आमतौर पर यह देखा गया है कि मनुष्य का स्वभाव होता है दूसरे को सलाह देने का | ट्रेन में, बस में जाते और किसी को खाँसी आ गयी तो तुरंत दूसरा आकर के कहता कि ऐसा करो | सलाह देना, सुझाव देना, ये जैसा मानो हमारे यहाँ स्वभाव में है | शुरू में 'मन की बात' को लेकर के भी जब सुझाव आते थे, सलाह के शब्द सुनाई देते थे, पढ़ने को मिलते थे, तो हमारी टीम को भी यही लगता था कि ये बहुत सारे लोगों को शायद ये आदत होगी, लेकिन हमने ज़रा बारीकी से देखने की कोशिश की तो मैं सचमुच में इतना भाव-विभोर हो गया | ज्यादातर सुझाव देने वाले लोग वो हैं, मुझ तक पहुँचने का प्रयास करने वाले लोग वो हैं, जो सचमुच में अपने जीवन में कुछ-न-कुछ करते हैं | कुछ अच्छा हो उस पर वो अपनी बुद्धि, शक्ति, सामर्थ्य, परिस्थिति के अनुसार प्रयत्नरत हैं | और ये चीज़ें जब ध्यान में आयीं तो मुझे लगा कि ये सुझाव सामान्य नहीं हैं | ये अनुभव के निचोड़ से निकले हुए हैं | कुछ लोग सुझाव इसलिये भी देते हैं कि उनको लगता है कि अगर यही विचार वहाँ, जहाँ काम कर रहे हैं, वो विचार अगर और लोग सुनें और उसका एक व्यापक रूप मिल जाए तो बहुत लोगों को फायदा हो सकता है | और इसलिये उनकी स्वाभाविक इच्छा रहती है कि 'मन की बात' में अगर इसका ज़िक्र हो जाए | ये सभी बातें मेरी दृष्टि से अत्यंत सकारात्मक हैं | मैं सबसे पहले तो अधिकतम सुझाव जो कि कर्मयोगियों के हैं, समाज के लिये कुछ-न-कुछ कर गुज़रने वाले लोगों के हैं | मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ | इतना ही नहीं मैं किसी बात को जब मैं उल्लेख करता हूँ तो, ऐसी-ऐसी चीज़ें ध्यान में आती हैं, तो बड़ा ही आनंद होता है | पिछली बात 'मन की बात' में कुछ लोगों ने मुझे सुझाव दिया था **food waste** हो रहा है, उसके संबंध में चिंता जताई थी और मैंने उल्लेख किया | और जब उल्लेख किया तो उसके बाद **NarendraModiApp** पर, **MyGov** पर देश के अनेक कोने में से अनेक लोगों ने, कैसे-कैसे **innovative ideas** के साथ **food waste** को बचाने के लिये क्या-क्या प्रयोग किये हैं | मैंने भी कभी सोचा नहीं था आज हमारे देश में खासकर के युवा-पीढ़ी, लम्बे अरसे से इस काम को कर रही है | कुछ सामाजिक संस्थायें करती हैं, ये तो हम कई वर्षों से जानते आए हैं, लेकिन मेरे देश के युवा इसमें लगे हुए हैं - ये तो मुझे बाद में पता चला | कइयों ने मुझे **videos** भेजे हैं | कई स्थान हैं जहाँ रोटी बैंक चल रही हैं | लोग रोटी बैंक में, अपने यहाँ से रोटी जमा करवाते हैं, सब्जी जमा करवाते हैं और जो **needy** लोग हैं वे वहाँ उसे प्राप्त भी कर लेते हैं | देने वाले को भी संतोष होता है, लेने वाले को भी कभी नीचा नहीं देखना पड़ता है | समाज के सहयोग से कैसे काम होते हैं, इसका ये उदाहरण है |

आज अप्रैल महीना पूर्ण हो रहा है, आखिरी दिवस है | 1 मई को गुजरात और महाराष्ट्र का स्थापना दिवस है | इस अवसर पर दोनों राज्यों के नागरिकों को मेरी तरफ़ से बहुत-बहुत शुभकामनायें | दोनों राज्यों ने विकास की नयी-नयी ऊँचाइयों को पार करने का लगातार प्रयास किया है | देश की उन्नति में योगदान दिया है | और दोनों राज्यों में महापुरुषों की अविरत श्रंखला और समाज के हर क्षेत्र में उनका जीवन हमें प्रेरणा देता रहता है | और इन महापुरुषों को याद करते हुए राज्य के स्थापना दिवस पर 2022, आज़ादी के 75 साल, हम अपने राज्य को, अपने देश को, अपने समाज को, अपने नगर को, अपने परिवार को कहाँ पहुँचाएँ इसका संकल्प लेना चाहिये | उस संकल्प को सिद्ध करने के लिये योजना बनानी चाहिये और सभी नागरिकों के सहयोग से आगे बढ़ना चाहिये | मेरी इन दोनों राज्यों को बहुत-बहुत शुभकामनायें हैं |

एक ज़माना था जब **climate change** ये **academic world** का विषय रहता था, **seminar** का विषय रहता था | लेकिन आज, हम लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी में, हम अनुभव भी करते हैं, अचरज भी करते हैं | कुदरत ने भी, खेल के सारे नियम बदल दिये हैं | हमारे देश में मई-जून में जो गर्मी होती है, वो इस बार मार्च-अप्रैल में अनुभव करने की नौबत आ गयी | और मुझे 'मन की बात' पर जब मैं लोगों के सुझाव ले रहा था, तो ज्यादातर सुझाव इन गर्मी के समय में क्या करना चाहिये, उस पर लोगों ने मुझे दिये हैं | वैसे सारी बातें प्रचलित हैं | नया नहीं होता है लेकिन फिर भी समय पर उसका पुनःस्मरण बहुत काम आता है |

कोई श्रीमान प्रशांत कुमार मिश्र, टी.एस. कार्तिक ऐसे अनेक मित्रों ने पक्षियों की चिंता की है | उन्होंने कहा कि बालकनी में, छत पर, पानी रखना चाहिये | और मैंने देखा है कि परिवार के छोटे-छोटे बालक इस बात को बखूबी करते हैं | एक बार उनको ध्यान में आ जाए कि ये पानी क्यों भरना चाहिये तो वो दिन में 10 बार देखने जाते हैं कि जो बर्तन रखा है उसमें पानी है कि नहीं है | और देखते रहते हैं कि पक्षी आये कि नहीं आये | हमें तो लगता है कि ये खेल चल रहा है लेकिन सचमुच में, बालक मन में ये संवेदनार्य जगाने का एक अद्भुत अनुभव होता है | आप भी कभी देखिये पशु-पक्षी के साथ थोड़ा सा भी लगाव एक नये आनंद की अनुभूति कराता है |

कुछ दिन पहले मुझे गुजरात से श्रीमान जगत भाई ने अपनी एक किताब भेजी है '**Save The Sparrows**' और जिसमें उन्होंने गौरैया की संख्या जो कम हो रही है उसकी चिंता तो की है लेकिन स्वयं ने **mission mode** में उसके संरक्षण के लिये क्या प्रयोग किये हैं, क्या प्रयास किये हैं, बहुत अच्छा वर्णन उस किताब में है | वैसे हमारे देश में तो पशु-पक्षी, प्रकृति उसके साथ सह-जीवन की बात, उस रंग से हमें रो हुए हैं लेकिन फिर भी ये आवश्यक है कि सामूहिक रूप से ऐसे प्रयासों को बल देना चाहिये | जब मैं गुजरात में मुख्यमंत्री था तो 'दाऊदी बोहरा समाज' के धर्मगुरु सैयदना साहब को सो साल हुए थे | वे 103 साल तक जीवित रहे हैं | और उनके सौ साल निमित्त बोहरा समाज ने **Burhani foundation** के द्वारा **sparrow** को बचाने के लिये एक बहुत बड़ा अभियान चलाया था | इसका शुभारम्भ करने का मुझे अवसर मिला था | करीब 52 हजार **bird feeders** उन्होंने दुनिया के कोने-कोने में वितरित किये थे | **Guinness book of World Records** में भी उसको स्थान मिला था |

कभी-कभी हम इतने व्यस्त होते हैं तो, अखबार देने वाला, दूध देने, सब्जी देने वाला, पोस्टमैन, कोई भी हमारे घर के दरवाजे से आता है, लेकिन हम भूल जाते हैं कि गर्मी के दिन हैं ज़रा पहले उसको पानी का तो पूछें !

नौजवान दोस्तो, कुछ बातें आपको साथ भी तो मैं करना चाहता हूँ | मुझे कभी-कभी चिंता हो रही है कि हमारी युवा पीढ़ी में कई लोगों को **comfort zone** में ही ज़िंदगी गुज़ारने में मज़ा आती है | माँ-बाप भी बड़े एक रक्षालभक अवस्था में ही उनका लालन-पालन करते हैं | कुछ दूसरे **extreme** भी होते हैं लेकिन ज्यादातर **comfort zone** वाला नज़र आता है | अब परीक्षाएँ समाप्त हो चुकी हैं | **Vacation** का मज़ा लेने के लिये योजनायें बन चुकी होंगी | **Summer vacation** गर्मियाँ होने के बाद भी ज़रा अच्छा लगता है | लेकिन मैं एक मित्र के रूप में आपका **vacation** कैसा जाए, कुछ बातें करना चाहता हूँ | मुझे विश्वास है कुछ लोग ज़रूर प्रयोग करेंगे और मुझे बतायेंगे भी | क्या आप **vacation** के इस समय का उपयोग, मैं तीन सुझाव देता हूँ उसमें से तीनों करें तो बहुत अच्छी बात है लेकिन तीन में से एक करने का प्रयास करें | ये देखें कि **new experience** हो, प्रयास करें कि **new skill** का अवसर लें, कोशिश करें कि जिसके विषय में न कभी सुना है, न देखा है, न जानते हैं फिर भी वहाँ जाने का मन करता है और चले जायें | **New places, new experiences, new skills** | कभी-कभार किसी चीज़ को टी.वी. पर देखना या किताब में पढ़ना या परिचितों से सुनना और उसी चीज़ को स्वयं अनुभव करना तो दोनों में आसमान-ज़मीन का अंतर होता है | मैं आपसे आग्रह करूँगा इस **vacation** में जहाँ भी आपकी जिज्ञासा है उसे जानने के लिये कोशिश कीजिये, नया **experiment** कीजिये | **Experiment positive** हो, थोड़ा **comfort zone** से बाहर ले जाने वाला हो | हम मध्यम-वर्गीय परिवार के हैं, सुखी परिवार के हैं | क्या दोस्तो कभी मन करता है कि **reservation** किये बिना रेलवे के **second class** में **ticket** लेकर के चढ़ जाएँ, कम-से-कम 24 घंटे का सफ़र करें | क्या अनुभव आता है | उन पैसेंजर्स की बातें क्या हैं, वो स्टेशन पर उतर कर क्या करते हैं, शायद सालभर में जो सीख नहीं पाते हैं उस 24 घंटे की **without reservation** वाली, भीड़-भाड़ वाली ट्रेन में सोने को भी न मिले, खड़े-खड़े जाना पड़े | कभी तो अनुभव कीजिये | मैं ये नहीं कहता हूँ बार-बार करिये, एक-आध बार तो करिये | शाम का समय हो अपना **football** ले करके, **volleyball** ले करके या कोई भी खेल-कूद का साधन ले करके तटन गरीब बस्ती में चले जाएँ | उन गरीब बालकों के साथ खुद खेलिये, आप देखिये, शायद ज़िंदगी में खेल का आनंद पहले कभी नहीं मिला होगा - ऐसा आपको मिलेगा | समाज में इस प्रकार की ज़िंदगी गुज़ारने वाले बच्चों को जब आपके साथ खेलने का अवसर मिलेगा, आपने सोचा है उनके जीवन में कितना बड़ा बदलाव आएगा | और मैं विश्वास करता हूँ एक बार जायेंगे, बार-बार जाने का मन कर जाएगा | ये अनुभव आपको बहुत कुछ सिखाएगा | कई **volunteer organisations** सेवा के काम करते रहते हैं | आप तो **Google** गुरु से जुड़े हुए हैं उस पर ढूँढ़िए | किसी ऐसे **organisation** के साथ 15 दिन, 20 दिन के लिये जुड़ जाइये, चले जाइये, जंगलों में चले जाइये | कभी-कभी बहुत **summer camp** लगते हैं, **personality development** के लगते हैं, कई प्रकार के विकास के लिये लगते हैं उसमें शरीक हो सकते हैं | लेकिन साथ-साथ कभी आपको लगता है कि आपने ऐसे **summer camp** किये हों, **personality development** का **course** किया हो | आप बिना पैसों के लिये समाज के उन लोगों के पास पहुँचें जिनको ऐसा अवसर नहीं है और जो आपसे सीखता है, उनको सिखायें | कैसे किया जा सकता है, आप उनको सिखा सकते हैं | मुझे इस बात की भी चिंता सता रही है कि **technology** दूरियों कम करने के लिये आयी, **technology** सीमायें समाप्त करने के लिये आयी | लेकिन उसका दुष्परिणाम ये हुआ है कि एक ही घर में छः लोग एक ही कमरे में बैठें हों लेकिन दूरियाँ इतनी हों कि कल्पना ही नहीं कर सकते | क्यों ? हर कोई **technology** से कहीं और **busy** हो गया है | सामूहिकता भी एक संस्कार है, सामूहिकता एक शक्ति है | दूसरा मैंने कहा कि **skill** | क्या आपका मन नहीं करता कि आप कुछ नया सीखें ! आज स्पर्द्धा का युग है | **Examination** में इतने डूबे हुए रहते हैं | उत्तम से उत्तम अंक पाने के लिये खप जाते हैं, खो जाते हैं | **Vacation** में भी कोई न कोई **coaching class** लगा रहता है, अगली **exam** की चिंता रहती है | कभी-कभी डर लगता है कि **robot** तो नहीं हो रही हमारी युवा-पीढ़ी | मशीन की तरह ज़िंदगी नहीं गुज़ार रही |

दोस्तो, जीवन में बहुत-कुछ बनने के सपने, अच्छी बात है, कुछ कर गुज़रने के इरादे अच्छी बात है, और करना भी चाहिये | लेकिन ये भी देखिये कि अपने भीतर जो **human element** है वो तो कहीं कुंठित नहीं हो रहा है, हम मानवीय गुणों से कहीं दूर तो नहीं चले जा रहे हैं ! **Skill development** में इस पहलू पर थोड़ा बल दिया जा सकता है क्या ! **Technology** से दूर, खुद के साथ समय गुज़ारने का प्रयास | संगीत का कोई वाद्य सीख रहे हैं, कोई नई भाषा के 5-50 वाक्य सीख रहे हैं, तमिल हो, तेलुगु हो, अरमिया हो, बांग्ला हो, मलयालम हो, गुजराती हो, मराठी हो, पंजाबी हो | कितनी विविधताओं से भरा हुआ देश है और नज़र करें तो हमारे अगल-बगल में ही कोई न कोई सिखाने वाला मिल सकता है | **Swimming** नहीं आता तो **swimming** सीखें, **drawing** करें, भले उत्तम **drawing** नहीं आएगा लेकिन कुछ तो कागज़ पर हाथ लगाने की कोशिश करें | आपका भीतर की जो संवेदना है वो प्रकट होने लग जायेगी | कभी-कभी छोटे-छोटे काम जिसको हम कहते हैं - हयें, क्यों न मन करें, हम सीखें ! आपको **car driving** तो सीखने का मन करता है ! क्या कभी **auto-rickshaw** सीखने का मन करता है क्या ! आप **cycle** तो चला लेते हैं, लेकिन **three-wheeler** वाली **cycle** जो लोगों को ले कर के जाते हैं - कभी चलाने की कोशिश की है क्या ! आप देखें ये सारे नये प्रयोग ये **skill** ऐसी है आपको आनंद भी देगी और जीवन को एक दायरे में जो बाँध दिया है न उससे आपको बाहर निकाल देगी | **Out of box** कुछ करिये दोस्तो | ज़िंदगी बनाने का यही तो अवसर होता है | और आप सोचते होंगे कि सारी **exam**, समाप्त हो जाए, **Career** के नये पड़ाव पर जाऊँगा तब सीखूँगा तो वो तो मौका नहीं आया | फिर आप दूसरी इज़ाज़त में पड़ जायेंगे और इसलिये मैं आपसे कहूँगा, अगर आपको जादू सीखने का शौक हो तो ताश के पत्तों की जादू सीखिए | अपने यार-दोस्तों को जादू दिखाते रहिये | कुछ-न-कुछ ऐसी चीज़ें जो आप नहीं जानते हैं उसको जानने का प्रयास कीजिये, उससे आपको ज़रूर लाभ होगा | आपके भीतर की मानवीय शक्तियों को चेतना मिलेगी | विकास के लिये बहुत अच्छा अवसर बनेगा | मैं अपने अनुभव से कहता हूँ दुनिया को देखने से जितना सीखने-समझने को मिलता है जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते | नये-नये स्थान, नये-नये शहर, नये-नये नगर, नये-नये गाँव, नये-नये इलाक़े | लेकिन जाने से पहले कहाँ जा रहें - उसका अभ्यास और जा करके एक जिज्ञासु की तरह उसे देखना, समझना, लोगों से चर्चा करना, उनसे पूछना ये अगर प्रयास किया तो उसे देखने का आनंद कुछ और होगा | आप ज़रूर कोशिश कीजिये और तय कीजिये **travelling** ज्यादा न करें | एक स्थान पर जाकर कर के तीन दिन, चार दिन लगाइये | फिर दूसरे स्थान पर जाइये वहाँ तीन दिन -

चार दिन लगाइये । इससे आपको बहुत कुछ सीखने को मिलेगा । मैं चाहूँगा और ये भी सही है कि आप जब जा रहे हैं तो मुझे तस्वीर भी share कीजिये । क्या नया देखा ? कहाँ गए थे ? आप Hash tag Incredible India इसका उपयोग कर के अपने इन अनुभवों को share कीजिये ।

दोस्तो, इस बार भारत सरकार ने भी आपके लिये बड़ा अच्छा अवसर दिया है । नई पीढ़ी तो नकद से करीब-करीब मुक्त ही हो रही है । उसको cash की ज़रूरत नहीं है । वो Digital Currency में विश्वास करने लग गई हैं । आप तो करते हैं लेकिन इसी योजना से आप कमाई भी कर सकते हैं - आपने सोचा है । भारत सरकार की एक योजना है । अगर BHIM App जो कि आप download करते होंगे । आप उपयोग भी करते होंगे । लेकिन किसी और को refer करें । किसी और को जोड़ें और वो नया व्यक्ति अगर तीन transaction करे, आर्थिक कारोबार तीन बार करे, तो इस काम को करने के लिये आपको 10 रुपये की कमाई होती है । आपके खाते में सरकार की तरफ से 10 रुपये जमा हो जायेगा । अगर दिन में आपने 20 लोगों से करवा लिया तो आप शाम होते-होते 200 रुपये कमा लेंगे । व्यापारियों को भी कमाई हो सकती है, विद्यार्थियों को भी कमाई हो सकती है । और ये योजना 14 अक्टूबर तक है । Digital India बनाने में आपका योगदान होगा । New India के आप एक प्रहरी बन जाएँगे, तो vacation का vacation और कमाई की कमाई । refer & earn ।

आमतौर पर हमारे देश में VIP culture के प्रति एक नज़रत का माहौल है लेकिन ये इतना गहरा है - ये मुझे अभी-अभी अनुभव हुआ । जब सरकार ने तय कर दिया कि अब हिंदुस्तान में कितना ही बड़ा व्यक्ति क्यों न हो, वो अपनी गाड़ी पर लाल बत्ती लगा कर के नहीं घूमेगा । वो एक प्रकार से VIP culture का symbol बन गया था लेकिन अनुभव ये कहता था कि लाल बत्ती तो vehicle पर लगती थी, गाड़ी पर लगती थी, लेकिन धीरे-धीरे-धीरे वो दिमाग में घुस जाती थी और दिमागी तौर पर VIP culture पनप चुका है । अभी तो लाल बत्ती गई है इसके लिये कोई ये तो दावा नहीं कर पायेगा कि दिमाग में जो लाल बत्ती घुस गई है वो निकल गई होगी । मुझे बड़ा interesting एक phone call आया । खैर उस phone में उन्होंने आशंका भी व्यक्त की है लेकिन इस समय इतना अंदाज़ आता है इस phone call से कि सामान्य मानवी ये चीज़ें पसंद नहीं करता है । उसे दूरी महसूस होती है ।

“नमस्कार प्रधामंत्री जी मैं शिवा चौबे बोल रही हूँ, जबलपुर मध्य प्रदेश से । मैं Government के red beacon light ban के बारे में कुछ बोलना चाहती हूँ । मैंने एक लाइन पढ़ी न्यूज़पेपर में जिसमें लिखा था “every Indian is a VIP on a road” ये सुन के मुझे बहुत गर्व महसूस हुआ और खुशी भी हुई कि आज मेरा टाइम भी उतना ही ज़रूरी है । मुझे ट्रैफिक जाम में नहीं फंसना है और मुझे किसी के लिये रुकना भी नहीं है । तो मैं आपको दिल से बहुत धन्यवाद देना चाहती हूँ इस decision के लिये । और ये जो आपने स्वच्छ भारत अभियान चलाया है इसमें हमारा देश ही नहीं साफ़ हो रहा है, हमारी रोडों से VIP की दादागिरी भी साफ़ हो रही है - तो उसके लिये धन्यवाद ।”

सरकारी निर्णय से लाल बत्ती का जाना वो तो एक व्यवस्था का हिस्सा है । लेकिन मन से भी हमें प्रयत्नपूर्वक इसे निकालना है । हम सब मिल कर के जागरूक प्रयास करेंगे तो निकल सकता है । New India का हमारा concept यही है कि देश में VIP की जगह पर EPI का महत्व बढ़े । और जब मैं VIP के स्थान पर EPI कह रहा हूँ तो मेरा भाव स्पष्ट है - Every Person is Important । हर व्यक्ति का महत्व है, हर व्यक्ति का माहात्म्य है । सवा-सौ करोड़ देशवासियों का महत्व हम स्वीकार करें, सवा-सौ करोड़ देशवासियों का माहात्म्य स्वीकार करें तो महान सपनों को पूरा करने के लिये कितनी बड़ी शक्ति एकजुट हो जाएगी । हम सबने मिलकर के करना है ।

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं हमेशा कहता हूँ कि हम इतिहास को, हमारी संस्कृतियों को, हमारी परम्पराओं को, बार-बार याद करते रहें । उससे हमें ऊर्जा मिलती है, प्रेरणा मिलती है । इस वर्ष हम सवा-सौ करोड़ देशवासी संत रामानुजाचार्य जी की 1000वीं जयंती मना रहे हैं । किसी-न-किसी कारणवश हम इतने बंध गये, इतने छोटे हो गये कि ज्यादा-ज्यादा शताब्दियों तक का ही विचार करते रहे । दुनिया के अन्य देशों के लिये तो शताब्दी का बड़ा महत्व होगा । लेकिन भारत इतना पुरातन राष्ट्र है कि उसके नसीब में हजार साल और हजार साल से भी पुरानी यादों को मनाने का अवसर हमें मिला है । एक हजार साल पहले का समाज कैसा होगा ? सोच कैसी होगी ? थोड़ी कल्पना तो कीजिये । आज भी सामाजिक रुढ़ियों को तोड़ कर के निकलना हो तो कितनी दिक्रत होती है । एक हजार साल पहले कैसा होता होगा ? बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि रामानुजाचार्य जी ने समाज में जो बुराईयाँ थी, ऊँच-नीच का भाव था, छूत-अछूत का भाव था, जातिवाद का भाव था, इसके खिलाफ़ बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी थी । स्वयं ने अपने आचरण द्वारा समाज जिनको अछूत मानता था उनको गले लगाया था । हजार साल पहले उनके मंदिर प्रवेश के लिये उन्होंने आंदोलन किये थे और सफलतापूर्वक मंदिर प्रवेश करवाये थे । हम कितने भाग्यवान हैं कि हर युग में हमारे समाज की बुराईयों को खत्म करने के लिये हमारे समाज में से ही महापुरुष पैदा हुए हैं । संत रामानुजाचार्य जी की 1000वीं जयंती मना रहे हैं तब, सामाजिक एकता के लिये, संगठन में शक्ति है - इस भाव को जगाने के लिये उनसे हम प्रेरणा लें ।

भारत सरकार भी कल 1 मई को ‘संत रामानुजाचार्य’ जी की स्मृति में एक stamp release करने जा रही है । मैं संत रामानुजाचार्य जी को आदर पूर्वक नमन करता हूँ, श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ ।

मेरे प्यारे देशवासियो, कल 1 मई का एक और भी महत्व है । दुनिया के कई भागों में उसे ‘श्रमिक दिवस’ के रूप में भी मनाया जाता है । और जब ‘श्रमिक दिवस’ की बात आती है, Labour की चर्चा होती है, Labourers की चर्चा होती है तो मुझे बाबा साहब अम्बेडकर की याद आना बहुत स्वाभाविक है । और बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि आज श्रमिकों को जो सहूलियतें मिली हैं, जो आदर मिला है, उसके लिये हम बाबा साहब के आभारी हैं । श्रमिकों के कल्याण के लिये बाबा साहब का योगदान अविस्मरणीय है । आज जब मैं बाबा साहब की बात करता हूँ, संत रामानुजाचार्य जी की बात करता हूँ तो 12वीं सदी के कर्नाटक के महान संत और सामाजिक सुधारक ‘जगत गुरु बसवेश्वर’ जी की भी याद आती है । कल ही मुझे एक समारोह में जाने का अवसर मिला । उनके वचनामृत के संग्रह को लोकार्पण का वो अवसर था । 12वीं शताब्दी में कन्नड़ भाषा में उन्होंने श्रम, श्रमिक उस पर गहन विचार रखे हैं । कन्नड़ भाषा में उन्होंने कहा था - “काय कवे कैलास”, उसका अर्थ होता है - आप अपने परिश्रम से ही भगवान शिव के घर कैलाश की प्राप्ति कर सकते हैं यानि कि कर्म करने से ही स्वर्ग की प्राप्ति होती है । दूसरे शब्दों में कहें तो श्रम ही शिव है । मैं बार-बार ‘श्रमेव-जयते’ की बात करता हूँ । ‘Dignity of labour’ की बात करता हूँ । मुझे बराबर याद है भारतीय मज़दूर संघ के जनक और चिन्तक जिन्होंने श्रमिकों के लिए बहुत चिंतन किया ऐसे श्रीमान दत्तोपन्त ठेंगड़ी कहा करते थे - एक तरफ़ माओवाद से प्रेरित विचार था कि “दुनिया के मज़दूर एक हो जाओ” और दत्तोपन्त ठेंगड़ी कहते थे “मज़दूरों आओ दुनिया को एक करें” । एक तरफ़ कहा जाता था- ‘Workers of the world unite’ । भारतीय चिंतन से निकली हुई विचारधारा को ले करके दत्तोपन्त ठेंगड़ी कहा करते थे - ‘Workers unite the world’ । आज जब श्रमिकों की बात करता हूँ तो दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी को याद करना बहुत स्वाभाविक है ।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ दिन के बाद हम बुद्ध पूर्णिमा मनायेंगे । विश्वभर में भगवान बुद्ध से जुड़े हुए लोग उत्सव मनाते हैं । विश्व आज जिन समस्याओं से गुज़र रहा है हिंसा, युद्ध, विनाशलीला, शस्त्रों की स्पर्द्धा, जब ये वातावरण देखते हैं तो तब, बुद्ध के विचार बहुत ही relevant लगते हैं । और भारत में तो अशोक का जीवन युद्ध से बुद्ध की यात्रा का उत्तम प्रतीक है । मेरा सौभाग्य है कि बुद्ध पूर्णिमा के इस महान पर्व पर United Nations के द्वारा vesak day मनाया जाता है । इस वर्ष ये श्रीलंका में हो रहा है । इस पवित्र पर्व पर मुझे श्रीलंका में भगवान बुद्ध को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने का एक अवसर मिलेगा । उनकी यादों को ताज़ा करने का अवसर मिलेगा ।

मेरे प्यारे देशवासियो, भारत में हमेशा ‘सबका साथ-सबका विकास’ इसी मंत्र को ले करके आगे बढ़ने का प्रयास किया है । और जब हम सबका साथ-सबका विकास कहते हैं, तो वो सिर्फ़ भारत के अन्दर ही नहीं - वैश्विक परिवेश में भी है । और खास करके हमारे अड़ोस-पड़ोस देशों के लिए भी है । हमारे अड़ोस-पड़ोस के देशों का साथ भी हो, हमारे अड़ोस-पड़ोस के देशों का विकास भी हो । अनेक प्रकल्प चलते हैं । 5 मई को भारत दक्षिण-एशिया satellite launch करेगा । इस satellite की क्षमता तथा इससे जुड़ी सुविधायें दक्षिण-एशिया के आर्थिक तथा developmental प्राथमिकताओं को पूरा करने में काफ़ी मदद करेंगी । चाहे natural resources mapping करने की बात हो, tele-medicine की बात हो, education का क्षेत्र हो या अधिक गहरी IT connectivity हो, people to people संपर्क का प्रयास हो । South Asia का यह उपग्रह हमारे पूरे क्षेत्र को आगे बढ़ने में पूरा सहायक होगा । पूरे दक्षिण-एशिया के साथ सहयोग बढ़ाने के लिये भारत का एक महत्वपूर्ण कदम है - अनमोल नज़राना है । दक्षिण-एशिया के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का ये एक उपयुक्त उदाहरण है । दक्षिण एशियाई देशों जो कि South Asia Satellite से जुड़े हैं मैं उन सबका इस महत्वपूर्ण प्रयास के लिये स्वागत करता हूँ, शुभकामनायें देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो गर्मी बहुत है, अपनों को भी संभालिये, अपने को भी संभालिये । बहुत-बहुत शुभकामनायें । धन्यवाद ।

अतुल तिवारी / हिमांशु सिंह

